बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

प्रेमघन जी भारतेन्दु युग के महत्त्वपूर्ण कवि थे । उनका जन्म 1855 ई० में मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ और निधन 1922 ई० में। वे काव्य और जीवन दोनों क्षेत्रों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को अपना आदर्श मानते थे । वे निहायत कलात्मक एवं अलंकृत गद्य लिखते थे । उन्होंने भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया था । 1874 ई० में उन्होंने मिर्जापुर में 'रसिक समाज' की स्थापना की । उन्होंने 'आनंद कादंबिनी' मासिक पत्रिका तथा 'नागरी नीरद' नामक साप्ताहिक पत्र का संपादन किया । वे साहित्य सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन के सभापति भी रहे । उनकी रचनाएँ 'प्रेमघन सर्वस्व' नाम से संगृहीत हैं ।

प्रेमघन जी निबंधकार, नाटककार, कवि एवं समीक्षक थे । 'भारत सौभाग्य', 'प्रयाग रामागमन' उनके प्रसिद्ध नाटक हैं । उन्होंने 'जीर्ण जनपद' नामक एक काव्य लिखा जिसमें ग्रामीण जीवन का यथार्थवादी चित्रण है । प्रेमघन ने काव्य-रचना अधिकांशतः ब्रजभाषा और अवधी में की, किंतु युग के प्रभाव के कारण उनमें खड़ी बोली का व्यवहार और गद्योन्मुखता भी साफ दिखलाई पड़ती है । उनके काव्य में लोकोन्मुखता एवं यथार्थ-परायणता का आग्रह है । उन्होंने राष्ट्रीय स्वाधीनता की चेतना को अपना सहचर बनाया एवं साम्राज्यवाद तथा सामंतवाद का विरोध किया ।

'प्रेमघन सर्वस्व' से संकलित दोहों का यह गुच्छ 'स्वदेशी' शीर्षक के अंतर्गत यहाँ प्रस्तुत है । इन दोहों में नवजागरण का स्वर मुखरित है । दोहों की विषयवस्तु और उनका काव्य-वैभव इसके शीर्षक को सार्थकता प्रदान करते हैं । कवि की चिंता और उसकी स्वरभंगिमा आज कहीं अधिक प्रासंगिक है ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

स्वदेशी

सबै बिदेसी वस्तु नर, गति रति रीत लखात ।
भारतीयता कछु न अब, भारत म दरसात ॥1॥

मनुज भारती देखि कोउ, सकत नहीं पहिचान ।
मुसल्मान, हिंदू किधौं, कै हैं ये क्रिस्तान ॥2॥

पढ़ि विद्या परदेस की, बुद्धि विदेसी पाय ।
चाल-चलन परदेस की, गई इन्हैं अति भाय ॥3॥

ठटे बिदेसी ठाट सब, बन्यो देस बिदेस
सपनेहूँ जिनमें न कहुँ, भारतीयता लेस ॥4॥

बोलि सकत हिंदी नहीं, अब मिलि हिंदू लोग ।
अंगरेजी भाखन करत, अंगरेजी उपभोग ॥5॥

अंगरेजी बाहन, बसन, वेष रीति औ नीति ।
अंगरेजी रुचि, गृह, सकल, बस्तु देस विपरीत ॥6॥

हिन्दुस्तानी नाम सुनि, अब ये सकुचि लजात ।
भारतीय सब वस्तु ही, सों ये हाय घिनात ॥7॥

देस नगर बानक बनो, सब अंगरेजी चाल ।
हाटन मैं देखहु भरा, बसे अंगरेजी माल ॥8॥

जिनसों सम्हल सकत नहिं तनकी, धोती ढीली-ढाली ।
देस प्रबंध करिहिंगे ये यह, कैसी खाम खयाली ॥9॥

दास-वृत्ति की चाह चहूँ दिसि चारहु बरन बढ़ाली ।
करत खुशामद झूठ प्रशंसा मानहुँ बने डफाली ॥10॥

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।
2. कवि को भारत में भारतीयता क्यों नहीं दिखाई पड़ती ?
3. कवि समाज के किस वर्ग की आलोचना करता है और क्यों ?
4. कवि नगर, बाजार और अर्थव्यवस्था पर क्या टिप्पणी करता है ?
5. नेताओं के बारे में कवि की क्या राय है ?
6. कवि ने 'डफाली' किसे कहा है और क्यों ?
7. व्याख्या करें -

   (क) मनुज भारती देखि कोउ, सकत नहीं पहिचान ।

   (ख) अंग्रेजी रुचि, गृह, सकल बस्तु देस विपरीत ।
8. आपके मत से स्वदेशी की भावना किस दोहे में सबसे अधिक प्रभावशाली है ? स्पष्ट करें ।

कविता के आस-पास

1. नवजागरण के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी लें और एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें ।
2. भारतेंदु हिंदी नवजागरण के अग्रदूत थे । इस संबंध में अपने शिक्षक से चर्चा करें ।
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र के साथ प्रेमघन के संबंधों के बारे में भारतेंदु युग पर लिखी पुस्तकों की सहायता लेकर जानकारी प्राप्त करें ।
4. 'स्वदेशी' शीर्षक के अंतर्गत रखी जाने योग्य भारतेंदु युग के कवियों की कुछ रचनाएँ एकत्र कीजिए ।
5. विद्यालय के पुस्तकालय से रामचंद्र शुक्ल का निबंध 'प्रेमघन की छाया स्मृति' खोजकर पढ़ें और शिक्षक एवं मित्रों से चर्चा करें ।

भाषा की बात

1. निम्नांकित शब्दों से विशेषण बनाएँ –

   रुचि, देस, नगर, प्रबंध, खयाल, दासता, झूठ, प्रशंसा
2. निम्नांकित शब्दों का लिंग-निर्णय करते हुए वाक्य बनाएँ –

   चाल-चलन, खामखयाली, खुशामद, माल, वस्तु, वाहन, रीत, हाट, दासवृत्ति, बानक
3. कविता से संज्ञा पदों का चुनाव करें और उनके प्रकार भी बताएँ ।

शब्द निधि

गति	: स्वभाव
रति	: लगाव
रीत	: पद्धति
मनुज भारती	: भारतीय मनुष्य
क्रिस्तान	: क्रिश्चियन, अंग्रेज
बसन	: वस्त्र
बानक	: बाना, वेशभूषा
खामखयाली	: कोरी कल्पना
चारहु बरन	: चारों वर्णों में
डफाली	: डफ बजानेवाला, बाजा बजानेवाला

❑❑❑